Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 2, March–2021, (Special Issue), ISSN 2230-7540

कालिदास के महाकाव्यों में प्रकृति संरक्षण का संदेश

Dr. Vinod Kumar*

Assistant Professor, Sanskrit, Government Women's Post Graduate College, Kandhla, Shamli

सार – *भारतीय दर्शनों के अनुसार इस संपूर्ण जगत् का निर्माण पृथ्वी, वायु, अग्नि, आकाश, और जल इन पांच महाभूतों से होता है। अतः प्रकृति में दिखाई देने वाले समस्त पदार्थ भी इन पांच महाभूतों से ही निर्मित है। आधुनिक समय में जिसे पर्यावरण या पारिस्थितिकी या परिवेशिकी कहा जाता है उसे ही प्राचीन ग्रन्थों में प्रकृति का नाम दिया गया है। पर्यावरण शब्द परि+आ+वृ+ल्युट् से सिद्ध होता है। जिसका अर्थ है - वह वातावरण जो मनुष्य को चारो ओर से व्याप्त कर उससे प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है। प्रकृति के उत्पादन जैसे जल, वायु, मृदा, पादप तथा विभिन्न प्राणी यहाँ तक कि स्वयं मानव भी पर्यावरण का एक अंश है। अतएव जीव जगत् और प्रकृति का परस्पर अभिन्न संबंध भी है। प्राकृतिक शुद्धता पर ही पर्यावरण की शुद्धता निर्भर होती है अतः अपने आसपास विद्यमान जगत् एवं जीवन के आधारभूत पंचमहाभूतों को शुद्ध बनाए रखना एवं उन्हें दूषित न होने देना मानव जीवन का परम कर्तव्य है। इसी कारण प्राचीन काल से ही विशाल संस्कृत साहित्य में पर्यावरण संरक्षरण और संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया गया है। वृक्ष वनस्पतियों को शास्त्रों में देवता तुल्य मानकर उनकी पूजा अर्चना करने का विधान है। क्योकि वृक्ष स्वाभाविक रूप से विषैली वायु का स्वयं पान कर मानव जीवन को शुद्ध प्राणवायु प्रदान करते हैं। अतएव यजुर्वेद का ऋषि वृक्ष वनस्पतियों की उपासना करता हुआ मंत्रोच्चारण करता है नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः। वनानां पतये नमः। ओषधीनां पतये नमः।*

----------X----------

संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि, महाकवि कालिदास अपने ग्रंथों में प्रकृति से विशेष प्रेम करते दिखाई देते हैं। उन्होंने दो महाकाव्यों की रचना की है - कुमारसंभव महाकाव्य एवं रघुवंश महाकाव्य जो कि इस शोध पत्र के प्रमुख विषयक्षेत्र हैं। इन दोनों ही महाकाव्यों के प्राकृतिक वर्णनों में कालिदास ने प्रकृति के सौन्दय को तो प्रकट किया ही है साथ ही प्रकृति संरक्षण के प्रति जागरूकता प्रदर्शित करते हुए अपने नायक-नायिकाओं के माध्यम से उन्हें हानि न पहुंचाने का भी संदेश जनसाधारण को दिया है। किंच प्रकृति के वैशिष्ट्य एवं महत्व-प्रतिपादन में उन्होंने 'ऋतुसंहार' नामक एव स्वतंत्र मुक्तक काव्य ही लिख दिया है। जबकि अपने विश्वप्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' के मंगलाचरण में उन्होने अष्टमूर्ति देव के रूप में प्रकृति के मूलभूत तत्वों (जल,अग्नि,सूर्य,चंद्रमा,आकाश,पृथ्वी,वायु) की स्तुति करते हुए प्रकृति की ईशरूपता भी प्रतिपादित कर दी है।

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,

ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।

यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,

प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः।।

वे अपने दो महाकाव्यों मे से 'कुमारसंभव' का तो आरम्भ ही हिमालय के प्राकृतिक वर्णन से करते हैं-

अस्त्युत्तारस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।

पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।

कुमारसम्भव महाकाव्य के सूक्ष्माध्ययन से पता चलता है कि पार्वती शिव को पति रूप में प्राप्त करने हेतु तपस्या करने के लिए जिस गौरी शिखर पर्वत पर जाकर अपनी कुटिया बनाती है,वहां सर्वप्रथम वह पौधे रोपित करती है और उन्हें अपनी संतान की तरह जलरूपी दूध से प्रतिदिन सींचकर उनका संवदर्धन करती रहती है। जो कि वेदाध्ययन यज्ञ आदि की तरह ही उसकी तपस्या पूर्ण दिनचर्या का एक कार्य है। इसी प्रकार रघुवंश महाकाव्य में सिंह एवं दिलीप के संवाद के अवसर पर सिंह दिलीप को एक वृक्ष का परिचय कराते हुए कहता है कि हे राजन् यही वो देवदारू का वृक्ष है जिसे शिव और पार्वती ने मिलकर अपने पुत्र के समान पाला है। और जब इस पेड़ से रगड़ लगाकर हाथी ने इसकी छाल उतार दी थी तो पार्वती को ऐसा कष्ट हुआ था जैसा राक्षसों के साथ युद्ध करने पर क्षतग्रस्त अपने पुत्र कार्तिकेय को देखकर हुआ था। कालिदास पौधों के रोपण एवं वृक्षों के संरक्षण के प्रति इतने अधिक आग्रही है कि

www.ignited.in

वे कहते हैं यदि कोई विष का वृक्ष स्वयं उग आए और बडा हो जाये तो उसे भी नहीं काटना चाहिए। 'विषवृक्षोपि संवध्र्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्'। क्योंकि वह प्राणियों को हानि की अपेक्षा लाभ ही अधिक पहुंचाने वाला होगा। उसकी तपस्या के फलस्वरूप तपोवन में विरोधी हिंसक जंतुओ का भी द्वेषरहित होकर प्रेम पूर्वक एक साथ रहना प्रकृति प्रेम एवं जीव संरक्षण का अद्भुत उदाहरण है। पार्वती के द्वारा वृक्ष से स्वयं टूट कर गिरे हुए पत्तों को ही आहार के रूप में ग्रहण करने का वर्णन तो कालिदास के प्रकृति संरक्षण की पराकाष्ठा है। जिससे प्रेरणा लेकर पाठक कम से कम पुष्पों के दुरूपयोग को छोडने का प्रयास तो कर ही सकते हैं। क्योंकि फूल पत्तों आदि जब तक वृक्ष पर लगे रहते हैं तब तक हमें सुगंध आदि एवं प्रकाश सश्लेषण की प्रक्रिया द्वारा लाभान्वित करते रहते हैं। अतः उनको तोडना उचित नहीं।

संस्कृत साहित्य में वर्णित मुनियों के आश्रम मानव एवं वन्य जीवों के मध्य विद्यमान सौहार्द स्वस्थ पर्यावरण को द्योतित करते है। क्योंकि पशु पक्षी भी पर्यावरण के मुख्य घटक हैं। रघुवंश में हमें ऋषिपत्नियां हिरणों का लालन-पालन अपने संतानों की तरह करती हुई दृष्टिगोचर होती हैं तो कुमारसम्भव में पार्वती की तपस्या के फलस्वरूप तपोवन में विरोधी जन्तुओं ने भी अपना परस्पर वैरभाव त्याग दिया है और वे तपोवन में द्वेषरहित होकर प्रेमपूर्वक एक साथ रह रहे हैं। यह प्रकृति प्रेम एवं जीव संरक्षण का अद्भुत उदाहरण है।

तपोवन में आकर ब्रहमचारी के द्वारा पार्वती से यह पूछना कि तपोवन की लताओं एवं वृक्षों मे कोपल फूटना उचित प्रकार से तो हो रहा है ना! किसी प्रकार का अवरोध तो नहीं है? वन का जल तुम्हारे स्नान करने योग्य तो है ना! दूषित तो नही हैं? इत्यादि प्रश्न प्रकृति के मूलभूत (जल वृक्ष वनस्पति आदि) तत्वों की शुद्धता एवं संवर्द्धन के प्रति मानव को जागरूक रहने का संदेश देते हैं। वास्तव में देखा जाये तो प्राचीन ग्रन्थों में जल को दूषित करना महापाप माना गया है। रामायण में महर्षि वाल्मीकि भरत के मुख से इस प्रसंग को उपस्थापित करते हुए कहते है कि 'जिस की अनुमति से मेरे भ्राता राम वन में गये है उसे वही भयंकर पाप लगना चाहिए जो जल को दूषित करने या किसी को विष देने पर लगता है'-

पानीयदूषके पापं तथैव विषदायके।

यत्तदेकः स लभतां यस्योर्योनुमते गतः।।

अर्थात् यहां पानी को दूषित करना किसी को विष देकर जीवन समाप्त करने के बराबर माना गया है। प्राणियों के जीवन में जल की अपरिहार्य आवश्यकता एवं उसके अभाव में प्राणी जीवन के भयावहता को दर्शाने वाला कालिदास का एक ग्रीष्म ऋतु का वर्णन उस काल्पनिक तृतीय विश्व युद्ध का स्मरण कराता है जिसके विषय में पर्यावरणविद् कहते हैं कि तीसरा विश्वयुद्ध संसार में जल की प्राप्ति के लिए लड़ा जायेगा। क्योंकि उस स्थिति में प्राणी मृत्यु के भी भय को छोडकर जल प्राप्ति द्वारा अपने जीवन की रक्षा प्राथमिक कर्म समझते हैं। कालिदास अपने वर्णन में लिखते है कि 'कैसा प्रचण्ड ग्रीष्म है, सूखे कण्ठ से जल बिन्दुओं को ग्रहण करने वाले, सूर्य की प्रचण्ड किरणों से तप्त एवं अत्यधिक प्यासे, जल की इच्छा करने वाले हाथी यह भी भूल जाते है कि सिंह उन्हें मार डालेगा। वे प्यास से व्याकुल जल की खोज में सिंह से भी नहीं डरते।

रघुवंश महाकाव्य में पृथ्वी के शासक राजा दिलीप एवं स्वर्ग के राजा इंद्र के द्वारा अपनी अपनी संपत्तियों का परस्पर विनियम कर दोनो लोकों को सुचारू रूप से संचालित करना इस बात का स्पष्ट संदेश दे रहा है कि प्रकृति के अनुकूल, पर्यावरण को शुद्ध करने वाले यज्ञ आदि कार्यों के द्वारा देवता प्रसन्न होते हैं, और वे समय पर वर्षा आदि के द्वारा पृथ्वी का उपकार करते हैं-

दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम्।

सम्पद्विनियेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयम्।।

कालिदास द्वारा गुरू वसिष्ठ के आश्रममार्ग के वर्णनप्रसंग में सम्पूर्ण रास्ते के दोनों ओर स्थित वृक्षों की पंक्तियां बीच बीच में निकट स्थित कमलों की शोभा से युक्त तालाब उन तालाबों में खिल रहे कमलों की खुशबू एवं शीतल कणों से युक्त हवा का हल्का-हल्का स्पर्श अनायास ही सहृदय पाठक के मन में अत्यधिक संख्या में वृक्ष, वन, सुन्दर-सुन्दर पुष्प, शुद्ध जल एवं शुद्ध वायु के संरक्षण हेतु आकर्षणपूर्वक प्रेरणा प्रदान कर देते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कालिदास के महाकाव्यों में उनके पात्र प्रकृति से अत्याधिक प्रेम करते हुए, उसके प्रति अत्यधिक श्रद्धा भाव रखते हैं। यथार्थतः मानव में यह भाव आना ही प्रकृतिसंरक्षण का मूल है। अतः मनुष्य को प्रकृति प्रेमी होते हुए जल वायु आदि को दूषित होने से बचाना चाहिए। नगरीकरण की अंधी दौड में वृक्ष, वनों को न काटकर अधिक से अधिक संख्या में वृक्ष लगाने चाहिए ओर न केवल वृक्ष लगाने चाहिए अपितु पौधे लगाकर जब तक वे वृक्ष न बन जाए, उन पर फल फूल आदि ना आ जाए तब तक उनका संरक्षण एवं संवर्धन करते रहना चाहिए। संस्कृत साहित्य में एक वृक्ष का पालन करना 10 पुत्रों के पालन के समान महत्वपूर्ण, गरिमामय व लाभदायक माना गया है-

दशकूपसमा वापी दशवापी समो ह्रदः।

दशह्रदसमो पुत्रः दशपुत्रसमो द्रुमः।।

सन्दर्भ

1. हिन्दी विश्वकोश
2. यजुर्वेद अध्याय 16,मंत्र 17-19
3. अभिज्ञानशाकुन्तल अंक 1, श्लोक 1
4. कुमारसम्भव सर्ग 5, श्लोक 14
5. रघुवंशमहाकाव्य सर्ग 2, श्लोक 36-37
6. कुमारसम्भव सर्ग 2, श्लोक 55
7. वही सर्ग 5, श्लोक 28
8. रघुवंशमहाकाव्य सर्ग 1, श्लोक 50
9. कुमारसम्भवमहाकाव्य सर्ग 5, श्लोक 17
10. वही, सर्ग 5, श्लोक 33
11. रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 75, श्लोक 53
12. ऋतुसंहार 1/15
13. रघुवंश्महाकाव्य सर्ग 1, श्लोक 26
14. वही सर्ग 1, श्लोक 38 -45

Corresponding Author

Dr. Vinod Kumar*

Assistant Professor, Sanskrit, Government Women's Post Graduate College, Kandhla, Shamli